ICSSR Sponsored
ISSN: 2319-9997
Journal of Nehru Gram Bharati University, 2025; Vol. 14 (II):320-326

परिवारों द्वारा परित्यक्त माता–पिता के स्वास्थ्य दशाओं का अध्ययन

सविता श्रीवास्तव एवं प्रमोद कुमार मिश्रा

विभाग – शिक्षा शास्त्र, नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय)
प्रयागराज–221505, उ0 प्र0, भारत
ईमेल–srivastavasavita361@gmail.com

Received: 26.08.2025 *Revised: 17.10.2025* *Accepted: 09.11.2025*

सारांश

वर्तमान समय में सामाजिक परिवर्तन, शहरीकरण, परमाणु परिवार प्रणाली तथा आर्थिक चुनौतियों ने वृद्ध माता–पिता के परित्याग की समस्या को गम्भीर रूप से प्रभावित किया है। इस शोध में परित्यक्त माता–पिता के शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं की पहचान करने का प्रयास किया गया है। अध्ययन में वृद्धजनों में उत्पन्न होने वाली बीमारियाँ, पोषण की कमी, अकेलापन, अवसाद, चिंता, पारिवारिक सहयोग के अभाव, चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्धता तथा सामाजिक सुरक्षा संरचनाओं का मूल्यांकन किया गया। अनुसंधान से ज्ञात हुआ कि परित्यक्त माता–पिता विशेष रूप से उच्च रक्तचाप, गठिया, मधुमेह, अनिद्रा, भूलने की बीमारी तथा मानसिक तनाव से अधिक प्रभावित होते हैं। साथ ही सामाजिक अलगाव, आर्थिक आश्रय की कमी तथा उपेक्षा के कारण उनकी जीवन संतुष्टि एवं स्वास्थ्य स्तर अत्यन्त निम्न पाया गया। इस अध्ययन के आधार पर सुझाव दिया गया है कि समाज, परिवार, एनजीओ तथा सरकारी तंत्र द्वारा वृद्धजनों की चिकित्सा, मानसिक परामर्श, पुनर्वास तथा सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का विस्तार आवश्यक है।

की–वर्ड– *परित्यक्त माता–पिता, स्वास्थ्य स्थिति, पारिवारिक उपेक्षा, वृद्धावस्था*

प्रस्तावना –

भारतीय संस्कृति में माता–पिता को ईश्वरतुल्य माना जाता रहा है, किन्तु आधुनिक जीवनशैली, शहरीकरण और पारिवारिक मूल्यों में गिरावट के कारण आज अनेक वृद्ध माता–पिता उपेक्षित और परित्यक्त जीवन जीने को विवश हैं। ऐसे माता–पिता शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं से जूझते हैं। यह शोध लेख ऐसे परित्यक्त माता–पिता की स्वास्थ्य दशाओं का सामाजिक–वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करता है।

भारतीय सामाजिक संरचना में पारंपरिक रूप से परिवार को व्यक्ति की

पहली और सबसे महत्त्वपूर्ण सामाजिक संस्था के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। संयुक्त परिवार प्रणाली, जिसमें सभी पीढ़ियाँ एक साथ सह–अस्तित्व में रहती थीं, वृद्धजनों को सुरक्षा, सम्मान एवं आत्मीयता का अनुभव कराती थी। किन्तु वैश्वीकरण, नगरीकरण, औद्योगीकरण एवं आधुनिक जीवनशैली की जटिलताओं ने इस संरचना को गहराई से प्रभावित किया है। एकल परिवारों की बढ़ती प्रवृत्ति, रोजगार हेतु पलायन, महिलाओं की कार्यक्षेत्र में बढ़ती भागीदारी तथा सामाजिक मूल्यों में गिरावट जैसे कारकों ने वृद्धजनों की स्थिति को विशेष रूप से संकटग्रस्त बना दिया है।

वर्तमान सामाजिक परिदृश्य में यह दुखद सत्य सामने आ रहा है कि अनेक माता–पिता, जिन्होंने अपने बच्चों के पालन–पोषण, शिक्षा एवं जीवन निर्माण में जीवन पर्यंत त्याग और समर्पण किया, उन्हीं बच्चों द्वारा वृद्धावस्था में उपेक्षित और परित्यक्त कर दिए जा रहे हैं। यह परित्याग न केवल सामाजिक विसंगति को जन्म देता है, बल्कि वृद्धजनों के शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य पर भी अत्यंत नकारात्मक प्रभाव डालता है। इस प्रकार की उपेक्षा उन्हें अनेक रोगों, मानसिक तनाव, अवसाद, अकेलेपन, आत्महत्या की प्रवृत्ति और सामाजिक बहिष्करण की ओर धकेल देती है।

स्वास्थ्य केवल रोग की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि यह शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण की एक समग्र स्थिति है। जब वृद्धजन परिवार के सहारे से वंचित हो जाते हैं, तो उनके जीवन की गुणवत्ता में स्पष्ट गिरावट आती है। स्वास्थ्य सेवाओं तक उनकी पहुँच बाधित हो जाती है और वे उचित देखभाल, पोषण एवं दवाओं से वंचित रह जाते हैं। मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी वे उपेक्षा, हीनता एवं भय की स्थिति में जीवन व्यतीत करने लगते हैं। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक ढांचे में वृद्धजन एक हाशिए पर खड़ी आबादी में तब्दील हो जाते हैं।

इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उन परित्यक्त माता–पिता की स्वास्थ्य दशाओं का विश्लेषण करना है, जिन्हें उनके ही परिवार ने त्याग दिया है। यह अध्ययन इस पक्ष पर केंद्रित है कि ऐसे वृद्धजनों की शारीरिक एवं मानसिक समस्याएँ क्या हैं, उन्हें किस प्रकार की स्वास्थ्य सुविधाओं की आवश्यकता है, तथा वे सामाजिक सहायता एवं सहानुभूति से किस हद तक वंचित हैं। इस शोध के माध्यम से यह प्रयास किया गया है कि वृद्धजनों के स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं को केवल चिकित्सकीय परिप्रेक्ष्य में नहीं, अपितु एक सामाजिक संकट के रूप में भी समझा जाए।

यह शोध न केवल तथ्यों का दस्तावेज है, बल्कि यह समाज, परिवार, सरकार एवं नीति–निर्माताओं के समक्ष यह प्रश्न भी उठाता है कि एक सभ्य समाज में वृद्ध माता–पिता के साथ ऐसा व्यवहार कहाँ तक स्वीकार्य है। अतः यह अध्ययन सामाजिक पुनरावलोकन और उत्तरदायित्व की पुर्नपरिभाषा का आह्वान करता है।

अध्ययन की आवश्यकता –

वृद्धजन भारत की जनसंख्या का एक महत्त्वपूर्ण भाग हैं। परंतु जब उन्हें

उनके ही परिवार द्वारा त्याग दिया जाता है, तो उनके स्वास्थ्य पर अत्यधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। शारीरिक बीमारियाँ, मानसिक तनाव, अवसाद, और सामाजिक अलगाव जैसे मुद्दे उभरते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में यह अध्ययन नितांत आवश्यक है।

वृद्धावस्था एक स्वाभाविक एवं अवश्यम्भावी प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति की शारीरिक क्षमताएँ क्षीण होने लगती हैं और उसे समाज तथा परिवार से विशेष सहयोग एवं देखभाल की अपेक्षा होती है। पारंपरिक भारतीय परिवारों में यह भूमिका स्वाभाविक रूप से निभाई जाती थी, किन्तु वर्तमान समय में सामाजिक संरचनाओं में हो रहे तीव्र परिवर्तन, व्यक्तिगतता की प्रवृत्ति, तथा नैतिक मूल्यों के क्षरण ने वृद्ध माता–पिता की स्थिति को अत्यन्त दयनीय बना दिया है। विशेषकर जब वे अपने ही बच्चों या परिजनों द्वारा उपेक्षित अथवा परित्यक्त कर दिए जाते हैं, तो उनकी स्थिति सामाजिक, मानसिक एवं शारीरिक तीनों ही स्तरों पर संकटपूर्ण हो जाती है।

परित्यक्त माता–पिता के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती उनके स्वास्थ्य की होती है। जब वे भावनात्मक, आर्थिक और सामाजिक सहारे से वंचित हो जाते हैं, तब उनका मानसिक संतुलन बिगड़ता है, आत्मविश्वास क्षीण होता है और वे अवसाद, चिंता, अनिद्रा, अकेलापन एवं आत्मघात जैसी गम्भीर मानसिक स्थितियों से गुजरते हैं। इसके साथ ही, समुचित देखभाल के अभाव में शारीरिक रोग जैसे– उच्च रक्तचाप, मधुमेह, गठिया, हृदय रोग, दृष्टिदोष, चलने–फिरने में असमर्थता आदि उन्हें और अधिक निर्बल बना देते हैं। हालाँकि सरकार द्वारा वरिष्ठ नागरिकों हेतु कुछ योजनाएँ चलाई जा रही हैं, जैसे वृद्धावस्था पेंशन, हेल्थ कार्ड, वरिष्ठ नागरिक अधिनियम 2007 आदि, फिर भी जमीनी स्तर पर इनकी प्रभावशीलता सीमित है। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच, परामर्शदाताओं की उपलब्धता, एवं समाजिक जागरूकता अत्यन्त सीमित है। दूसरी ओर, परिवारों के टूटते सम्बन्ध और भौतिकवादी सोच ने वृद्धजनों के लिए सामाजिक सुरक्षा की पारम्परिक व्यवस्था को भी समाप्तप्राय कर दिया है।

इस परिप्रेक्ष्य में यह अध्ययन आवश्यक हो जाता है क्योंकि–

1. परित्यक्त वृद्ध माता–पिता की स्वास्थ्य दशा का सटीक मूल्यांकन किया जा सके।
2. स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता एवं पहुँच में व्याप्त खामियों की पहचान की जा सके।
3. मानसिक स्वास्थ्य की उपेक्षित स्थिति को उजागर किया जा सके।
4. समाज एवं सरकार को इस दिशा में गंभीर हस्तक्षेप हेतु प्रेरित किया जा सके।

यह अध्ययन केवल एक सामाजिक यथार्थ को उजागर करने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य वृद्धजनों की गरिमा, अधिकार और स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशील नीतियों को बढ़ावा देना भी है। अतः इस शोध का महत्त्व शैक्षणिक ही नहीं सामाजिक और मानवीय दृष्टिकोण से भी अत्यन्त प्रासंगिक है।

शोध के उदेश्य–

1. परित्यक्त वृद्ध माता–पिता के आयु के अनुसार बीमारियों का अध्ययन करना।
2. परित्यक्त वृद्ध माता–पिता के लिंग के आधार पर बीमारियों का अध्ययन करना।

शोध पद्धति –

शोध की प्रकृति– वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक
नमूना आकार– 200 परित्यक्त माता–पिता
नमूना चयन विधि– उद्देश्यपूर्ण चयन
उपकरण– स्वास्थ्य सर्वेक्षण प्रश्नावली, साक्षात्कार
सांख्यिकीय विधि– प्रतिशत और आवृत्ति

आंकड़ों का विश्लेषण –

प्रस्तुत अध्ययन में निर्धारित किये गए उद्देश्यों के सन्दर्भ में प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण वर्णनात्मक सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया, जिसमें आवृत्ति, प्रतिशत एवं सरल तुलनात्मक विश्लेषण का प्रयोग हुआ।

प्रथम उद्देश्य से सम्बन्धित विश्लेषण व व्याख्या–

प्रस्तुत अध्ययन पूर्ण करने के क्रम में प्रथम उद्देश्य निर्धारित किया गया है कि– **परित्यक्त वृद्ध माता–पिता के आयु के अनुसार बीमारियों का अध्ययन करना**। आयु के अनुसार बीमारियों से सम्बन्धित निम्नलिखित आंकडों द्वारा इसे प्रदर्शित किया जा सकता हैं।

तालिका – 01

आयु के अनुसार बीमारियों से ग्रसित विवरण

N-200

आयु अन्तराल	हाँ		नहीं		योग	
	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
55-64	78	39	12	6	90	45
65-74	69	34.5	14	7	83	41.5
75+	15	7.5	12	6	27	13.5
योग	162	81	38	19	200	100

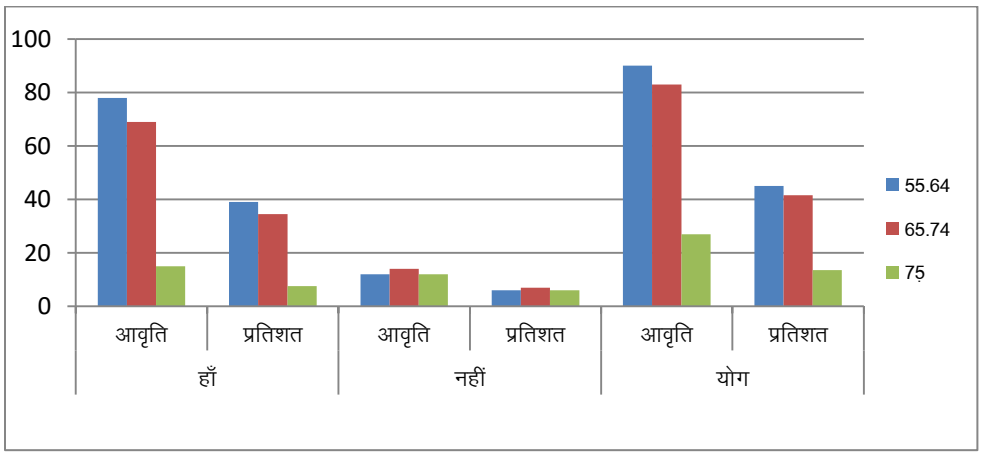

उपर्युक्त के अनुसार बीमारी से ग्रसित होने का विवरण है जिसमें 55–64 आयु वर्ग में परित्यक्त वृद्ध माता–पिता की संख्या 78 है जिसमें से 39 प्रतिशत वृद्धों का कहना है कि वे किसी न किसी बीमारी से ग्रसित हैं जबकी 12 प्रतिशत वृद्ध ऐसे भी हैं जिनका कहना है कि वे किसी भी बीमारी से ग्रसित नहीं हैं। इसी प्रकार 65–74 आयु वर्ग में सम्पूर्ण संख्या 69 है जिसमें से सबसे ज्यादा 34.5 प्रतिशत वृद्ध किसी न किसी बीमारी से ग्रस्त है। 75 या 75 से अधिक आयु वर्ग वाले परित्यक्त वृद्ध माता–पिता की सम्पूर्ण संख्या 15 है जिसमें 7.5 वृद्धजनों का कहना है कि वे बीमारी से ग्रसित हैं जबकी 12 वृद्धजन ऐसे भी जो किसी बीमारी से ग्रसित नहीं हैं।

द्वितीय उद्देश्य से सम्बन्धित विश्लेषण व व्याख्या–

प्रस्तुत अध्ययन पूर्ण करने के क्रम में द्वितीय उद्देश्य निर्धारित किया गया है कि– **परित्यक्त वृद्ध माता–पिता के लिंग के आधार पर बीमारियों का अध्ययन करना**। लिंग के आधार पर बीमारियों से सम्बन्धित निम्नलिखित आंकडों द्वारा इसे प्रदर्शित किया जा सकता हैं।

तालिका 02

लिंग के आधार पर बीमारियों से ग्रसित विवरण

N-200

लिंग	हाँ		नहीं		योग	
	आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत
पुरूष	90	45	24	12	114	57
महिला	70	35	16	8	86	43
योग	**160**	**80**	**40**	**20**	**200**	**100**

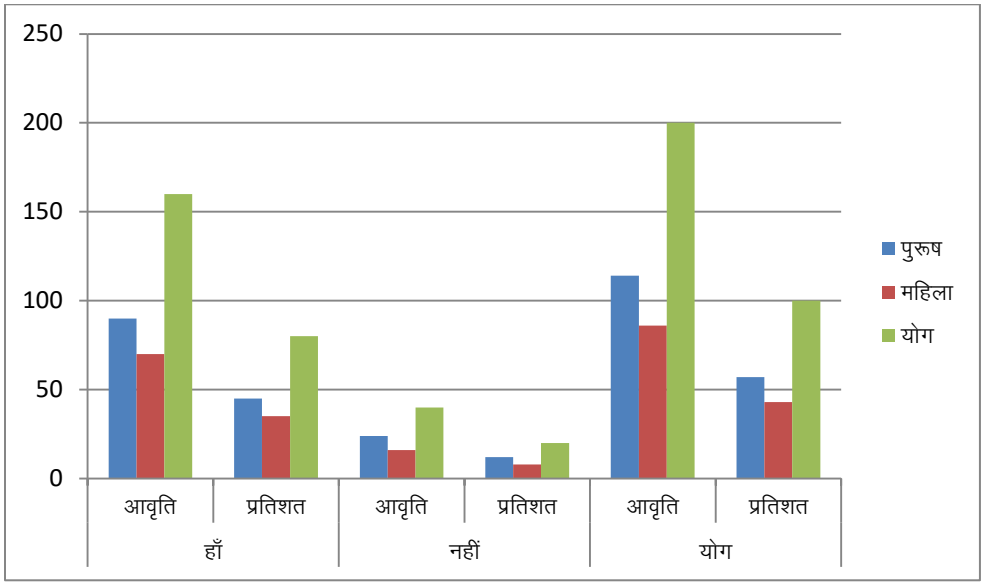

उपर्युक्त तालिका के आधार पर लिंग के अनुसार बीमारी से ग्रसित होने का विवरण प्रस्तुत करता है जिसमें सबसे ज्यादा संख्या पुरुषों की 114 है जहाँ 57 प्रतिशत पुरुष वर्ग का मानना है कि वे किसी न किसी बीमारी से ग्रसित हैं जबकि 12 प्रतिशत ऐसे भी पुरुष हैं जो किसी बीमारी से ग्रसित नहीं हैं। इसी प्रकार महिला वर्ग की सम्पूर्ण संख्या 86 है जिसमें 43 प्रतिशत महिलाओ का कहना है कि वे किसी न किसी बीमारी से ग्रसित हैं जबकी 8 प्रतिशत महिला ऐसी भी है जो किसी बीमारी से ग्रसित नहीं हैं।

इस प्रकार सम्पूर्ण सारणी के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि महिलाओं के तुलना में पुरुष वर्ग में बीमारी से ग्रसित होने की प्रतिशत ज्यादा है।

अध्ययन के पश्चात आकडो से प्राप्त परिणाम इस ओर इंगित करते है कि परित्यक्त वृद्ध माता–पिता के आयु के अनुसार 55–64 आयु के 45 प्रतिशत पुरुष का मानना है कि वे किसी न किसी बीमारी से ग्रसित हैं, 65–74 आयु वर्ग 34.5 प्रतिशत वृद्ध किसी न किसी बीमारी से ग्रस्त है। 75 या 75 से अधिक आयु वर्ग वाले परित्यक्त वृद्ध माता–पिता 7.5 वृद्धजनों का कहना है कि वे बीमारी से ग्रसित हैं जबकी 12 वृद्धजन ऐसे भी जो किसी बीमारी से ग्रसित नहीं हैं।

लिंग के अनुसार बीमारी से ग्रसित होने का अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि महिलाओं की तुलना में पुरुष वर्ग में बीमारी से ग्रसित होने का प्रतिशत अधिक है। जब परित्यक्त वृद्ध माता–पिता से यह पूछा गया कि क्या आपको कोई शारीरिक अक्षमता है तो अधिकांश उत्तरदाताओं ने उसका नकारात्मक उत्तर दिया तथा यह बताया कि उन्हें किसी प्रकार की शारीरिक अक्षमता नहीं है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. भारत सरकार (2007) वरिष्ठ नागरिकों का भरण–पोषण तथा कल्याण अधिनियम, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, नई दिल्ली।

2. राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (NSSO) (2021) भारत में वृद्धजन की स्थिति पर रिपोर्ट, भारत सरकार, सांख्यिकी और कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय।

3. विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) (2020) Health of Older People: A Global Overview] Geneva: World Health Organization.

4. Tripathi S- (2020½ – Ageing and Mental Health in India] Indian Journal of Gerontology, Vol- 34, Issue 2.

5. गांधी, अनीता (2018) वृद्धावस्था एक सामाजिक परिप्रेक्ष्य, दिल्ली विश्वविद्यालय, समाजशास्त्र विभाग।

6. Mishra, R.C. (2017) – Social Exclusion and the Aged in India, Rawat Publications, Jaipur.

7. सिंह, कमलेश (2019) परित्यक्त वृद्धजन एक सामाजिक संकट, सामाजिक शोध पत्रिका, खंड 12, अंक 3, पृष्ठ 45–52।

8. Government of India (2020) – National Policy on Senior Citizens, Ministry of Social Justice and Empowerment, New Delhi.

9. HelpAge India (2021) – Elder Abuse in India: Changing Trends and Realities, New Delhi: HelpAge Research Wing.

10. Verma, P. & Srivastava, M. (2022) – Impact of Family Neglect on Elderly Health, Journal of Social Health Studies, Vol. 8, No. 1, pp. 23–38.

Disclaimer/Publisher's Note:

The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.